माननीय राज्यपाल महोदय श्री राम नरेश यादव की नि:शक्त बच्चों से भेंट के अवसर पर उद्‌बोधन

स्थान :- राजभवन दिनांक :- 4 जनवरी, 2014 समय :- शाम 5 बजे

नि:शक्त बच्चों के बीच आकर मुझे बहु तप्रसन्नता हो रही है। मैं आप सब का राजभवन में स्वागत करता हूं।

नि:शक्तता कोई अभिशाप नहीं है। वास्तविकता यह है कि इस दुनिया में कोई भी परिपूर्ण नहीं है। कोई न कोई कमी हर इंसान में मौजूद होती है, कुछ नजर आती हैं तो कुछ छुपी रहती हैं। आवश्यकता इंसान में छुपी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करने की है।

मध्यप्रदेश में कराये गये सर्वे के अनुसार लगभग 8 लाख 14 हजार नि:शक्तजन चिन्हित किये गये हैं। नि:शक्त हमारे ही परिजन हैं, इनका हम सम्मान करें, इनका उत्थान करने के लिए तत्पर रहें। जैसे हम अपने बच्चों और परिजनों का उत्थान करना चाहते हैं। ईश्वर ने हमारे ऊपर बड़ी कृपा की है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम निशक्तजों के कल्याण के लिए हर सम्भव सहयोग दें उनके उत्थान में संयुक्त रूप से प्रयास करें।

विश्व में कई ऐसे विकलांग हैं जिन्होंने दृढ़ इच्छा शक्ति, निडरता और बहादुरी से बड़े बड़े पहाड़ों पर चढ़कर उस पर झंडा गाड़ा है। यही नहीं कई प्रतियोगताओं और मुकाबलों में विकलांगों ने आम लोगों से अधिक चमत्कारिक कार्य कर दिखाये हैं। आपको भी इनसे सीखना चाहिए। आवश्यकता सिर्फ इन बच्चों को प्रोत्साहित करने और हर प्रकार के प्रशिक्षण और सहायता की है।

जिस तरह हम अपने बच्चों का हर तरह से ध्यान रखते हैं उसी तरह नि:शक्तजन को प्रोत्साहित करने, उनके पुर्नवास और उनको समाज के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर देने की आवश्यकता है। सबसे बड़ी बात यह है कि हम सभी उनके साथ समान अधिकार प्राप्त एक नागरिक के रूप में व्यवहार करें, उनका सम्मान करें।

नि:शक्तजन बच्चों में भी बहुत कुछ करने का जज्बा होता है। हमारा कर्तव्य है कि उनके अंदर निराशा का भाव न आने दें। अगर उन्हें समुचित प्रोत्साहन और संसाधन उपलब्ध कराये जायें तो वे बेहतर कार्य कर सकते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि मध्यप्रदेश सरकार इस ओर प्रयासरत है। मध्यप्रदेश शासन ने नि:शक्त बच्चों के कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रम बनायें हैं।

सामाजिक न्याय विभाग द्वारा इन बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किये जा रहे कार्यों की मैं सराहना करता हूं।मैं कहना चाहता हूं कि आज हम सब नि:शक्त बच्चों को हर संभव प्रयास करके समाज की मुख्य - धारा में शामिल करने का संकल्प लें। निश्क्तजनों का कल्याण करने के लिए शासकीय कार्य ही काफी नहीं है इसके लिए सब को आगे आना होगा।

मुझे आशा है कि आपको शिविर से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला होगा। आज का युग तकनीक और प्रौद्योगिकी का युग है। आज हर वर्ग, श्रेणी और स्तर के लोगों के लिए मशीनों का निर्माण हो रहा है। इन मशीनों के उपयोग ने विकलांगता को निराधार सिद्ध कर दिया है। मैं इन बच्चों के प्रशिक्षकों को भी साधुवाद देना चाहता हूं जिनके कठिन परिश्रम और लगन से यह बच्चे इस लायक बन सके।

मैं आप सभी बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप सभी बच्चे भविष्य में आत्मर्निभर बनकर देश और प्रदेश के विकास में अपना योगदान देंगे।

जय हिन्द।